Bihar Board Class 7 Hindi Notes Chapter 17 सोना

सोना Summary in Hindi

सारांश – लेखिका को पशु-पक्षियों से बड़ा लगाव है उनके यहाँ कुत्ते-बिल्ली, पक्षियाँ आदि आनन्दपूर्वक पलते थे। एक दिन लेखिका को सुष्मिता वसु ने एक पत्र के माध्यम से हिरण स्वीकार करने का आग्रह किया। उस आग्रह भरे पत्र को पढ़कर लेखिका को "सोना" नामक हिरणं का ख्याल आया था। जो कुछ वर्ष पूर्व हिरण-शावक के रूप में लेखिका के घर लाया गया था। उस समय सोना ठीक से दूध भी नहीं. पी सकती थी। उसे दूध-पानी पिला-पिलाकर बचा लिया गया। उसके सुनहले रंग के कारण उसका नाम "सोना" रखा गया। उसकी पानीदार. आँखें ऐसी लगती थी मानो छलक पड़ेंगी।

यू ता जगत के सारे मानवेत्तर प्राणी विशेषकर पशु-पक्षी अपने क्रियाकलापों से मानव का मनोरंजन करते हैं। लेकिन निष्ठुर मनुष्य अपने स्वार्थसिद्धि के लिए अथवा उनके मांस-चर्म के लोलुप लोग उनका शिकार निर्ममतापूर्वक कर उसके कौतुक लीला को समाप्त कर देते हैं। सोना भी किसी मनुष्य के निष्ठुर मनोरंजन प्रियता का शिकार हो वन प्रदेश से उस समय लाया गया था जब उसकी माँ ने उसे बचाने के लिए सीना से लगाये शिकारी से शिकार हो अपना प्राण त्याग दी थी।

इस प्रकार अनाथ हिरण शावक को मुमूर्ष अवस्था में देख लेखिका मानवेत्तर प्राणी प्रेम ने उस शावक को बचा लिया । लेखिका की ममतामयी हृदय में अपने मनोरंजक क्रियाकलापों से सोना स्थान पा लिया। सोना सबों के लिए प्रिय एवं मनोरंजक बन गया। सोना लेखिका के पलंग के पास सोती सुबह में उठकर ही बाहर निकलती थी। वह छात्रावास के मैदान में पहले चौकड़ी भरती पुनः छात्रावास के हरेक रूम में जाकर निरीक्षण करती। बच्चे कुछ-कुछ खिलाने के लिए उत्सुक रहते लेकिन उसे मात्र बिस्कुट प्रिय था। – लेखिका के भोजन के समय आकर लेखिका के शरीर में तब तक सटकर खड़ी रहती जब तक भोजन समाप्त नहीं हो जाता । कुछ चावल रोटी उसे भी मिलता था लेकिन कच्ची सब्जी उसको ज्यादा प्रिय था।

बच्चे की पुकार सुन उसके साथ अपनी क्रीड़ा प्रारम्भ कर देती।

लेखिका जब कभी मैदान में खड़ी होती थी तो उनके प्रति अपना प्रेम-प्रदर्शन करने के लिए लेखिका के सिर पर से छलांग इस प्रकार लगाती कि देखने वाले को चोट लगने का भ्रम हो जाय । लेकिन लेखिका को उसने कभी चोट नहीं पहुँचाई । जब लेखिका अपने कक्ष में आती तो सबसे पहले उनके पैरों में अपना शरीर रगड़ती थी। जब लेखिका बैठ जाती तो उनकी साड़ी चबाती फिर चोटी चबाने लगती । जब सोना को लेखिका डाँटती तो अपने स्नेहिल आँखों से उन्हें देखती जिससे लेखिका का क्रोध शांत हो जाता और मुँख में हँसी आ जाती थी।

एक वर्ष बीत गया। सोना शावक से हिरण का रूप ले लिया। ग्रीष्मावकाश में लेखिका बद्रीनाथ यात्रा पर जाती हैं। जबकि पशु-पक्षियों के देख-रेख, पालन-पोषण के लिए समुचित व्यवस्था थी लेकिन "सोना" यदा-कदा लेखिका की खोज में फाटक से बाहर होने लगी। सेवकों ने उसकी सुरक्षा के दृष्टिकोण से रस्सी में बाँधकर रखने लगे। लेकिन एक दिन रस्सी में बँधी सोना ने ऊँची छलांग लगा दी। अत्यधिक चोट लगने के कारण उसके प्राण पखेरू उड़ गये। बाद में उसे गंगा में प्रवाहित कर दिया गया।

इस प्रकार सोना का मार्मिक वृत्तांत लेखिका को बद्रीनाथ यात्रा से लौटने पर मालूम हुआ। जिसे सुनकर लेखिका हिरण नहीं पालने का प्रण कर ली थी। लेकिन फिर भी लेखिका को हिरण पालना पड़ रहा है।

https://www.evidyarthi.in/